नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेता

सावित्री बाई फुले

बहुत कम लोग जानते हैं कि आज से डेढ़ सौ साल पहले सुश्री सावित्री बाई फुले ने क्रांति की ज्योति जगाई थी। वह और उनके पति श्री ज्योतिराव फुले ने मिलकर न सिर्फ सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरुकता फैलाई, स्वयं भी क्रांतिमय जीवन बिताया।

महाराष्ट्र के सतारा जिले में नामगांव नामक छोटे से गांव में सावित्री बाई का जन्म हुआ था। उनके तीन छोटे भाई थे। वह देखने में सुंदर और मजबूत काठी की थीं। बचपन से वह बहुत निडर और कामकाज में तेज थीं। पिता के घर लाड़-प्यार तो भरपूर मिला, पर उन्हें पढ़ाने-लिखाने का श्रेय उनके पति को है। जब उनका ब्याह हुआ उनकी उम्र 9 साल और उनके पति की 13 साल थी। यह ब्याह साधारण ब्याह नहीं था, समाज-सुधार और समाज-कल्याण की इच्छा रखने वाली दो महाशक्तियों का मिलन था।

उन्होंने 1848 में पूना में लड़कियों का स्कूल खोला। उस समय स्त्रियां तो अलग बात है, पुरुष अध्यापक भी मुश्किल से मिलते थे। ज्योतिराव ने सावित्री बाई को पढ़ाया-लिखाया और दोनों आजीवन नारी शिक्षा, नारी जागृति और नारी उद्धार में लगे रहे।

28 जनवरी 1853 को उन्होंने अपने पड़ोसी, उस्मान शेख के घर 'बालहत्या प्रतिबंधक गृह' बनाया जिसमें दो-चार साल में सौ से अधिक विधवाओं की प्रसूति हुई। पूरा इंतजाम सावत्री बाई देखती थीं। उनकी अपनी संतान नहीं थी, पर विधवाओं की कोख से जन्मे बच्चों की देखभाल और पालन का महान काम उन्होंने किया।

सावित्री बाई के पति के सामने दूसरे ब्याह का प्रस्ताव रखा गया। ज्योतिराव का जवाब था—"यदि पुरुष दूसरी शादी कर सकता है तो स्त्री क्यों नहीं कर सकती?" लोग चुप रह गए। एक बार वह नदी किनारे टहलने गए। वहां उन्होंने एक गर्भवती को आत्महत्या की कोशिश करते देखा। उसे रोककर उन्होंने कहा—"बेटी! हमारे घर चलो। हम तुम्हारे बच्चे को पाल लेंगे।" सावित्री बाई ने काशीबाई नामक उस विधवा को गले लगा लिया। उसे अपने घर शरण दी और उसके जन्मे बच्चे को गोद ले लिया। उसका नाम यशवंतराव रखा जो बड़ा होकर डाक्टर बना। उसका ब्याह 1889 में हुआ जो महाराष्ट्र का पहला अंतर्जातीय विवाह था।

पंडितों का विरोध

सावित्री बाई जब लड़कियों को पढ़ाने जातीं तो ब्राह्मणों और पंडितों ने उनका कड़ा विरोध किया और उन पर गोबर और पत्थर फेंकते। सावित्री बाई उनसे कहती—"मेरे भाइयो! मैं आपकी बेटियों-बहनों को पढ़ाती हूं। ये गोबर या पत्थर नहीं है, फूल हैं जो मुझे बढ़ावा देते हैं। भगवान आपको सुखी रखे।"

एक बार एक बच्चे का बाप गाली-गलौज करते स्कूल में घुसकर उस बच्चे को पीटना चाहता था जिसने उसके बेटे को मारा था। सावित्री बाई ने पढ़ाना बंद कर उसे समझाया—"बच्चे आज झगड़ेंगे, कल दोस्त बन जाएंगे। आप आज उस बच्चे को मारेंगे, कल उसका बाप आपके बेटे को मारेगा। छोटों का झगड़ा बड़ों में फैलेगा तो अनर्थ हो जाएगा।" जब वह सज्जन फिर भी नहीं माने तो सावित्री बाई ने सख्ती से कहा—"तो फिर मुझे कोई

और रास्ता अपनाना पड़ेगा।' यह सुनकर वह घबरा गए। उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ और वह माफी मांगकर चले गए।

एक बार जब वह स्कूल पढ़ाने जा रही थीं एक कट्टर सनातनी उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया और उन्हें धमकाने लगा—"यदि तुम लड़कियों और चमारों-कहारों को पढ़ाना बंद नहीं करोगी तो तुम्हारी इज्जत नहीं बचेगी।" आम रास्ते की इस घटना को बहुतों ने देखा-सुना पर किसी को बोलने की हिम्मत नहीं हुई। सावित्री बाई को बड़ा गुस्सा आया और उन्होंने उस बदमाश को दो-तीन थप्पड़ जड़ दिए। बदमाश बौखलाकर वहां से भाग गया। उसके बाद सावित्री बाई को तंग करने की हिम्मत किसी ने नहीं की।

आदर-सम्मान

1852 में अंग्रेज सरकार ने फुले दंपत्ति को सम्मानित करने के लिए एक सभा का आयोजन किया। वहां सबके बीच ज्योति फुले ने अपनी पत्नी से कहा—"यह गौरव तुम्हारा गौरव है। मैं तो केवल स्कूल खोलने का कारण बना। मुझे गुमान है कि उन स्कूलों को सुचारू रूप से चलाने में तुम सफल रही हो।"

सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती फुलवंतावाई झोडगे लिखती हैं—"इस देश की महिलाओं में सावित्री बाई प्रथम शिक्षित स्त्री, प्रथम अध्यापिका, भारत की सभी जातियों की प्रथम नेता और छुआछूत का जमकर विरोध करने वाली पहली कार्यकर्ता थीं। उन्होंने अपना पूरा जीवन दलित, खेतिहर मजदूरों की सेवा में लगा दिया।"

डा. एम.जी. माली के शब्दों में "सावित्री बाई का जीवन ऐसी मशाल है जिसके आलोक में भारतीय नारी पहली बार सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करना सीखी। सावित्री बाई के कार्य से भारतीय नारी की अनादि काल की जंजीर टूट गई। उसने स्वतंत्र होकर खुली हवा में सांस ली।"

ज्योति राव और सावित्री बाई ने सती प्रथा व विधवा-मुंडन का विरोध और विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने लड़कियों को पढ़ाने-लिखाने के साथ गरीब औरतों के लिए छोटे उद्योगों का भी इंतजाम किया। 'विधवा पुनर्विवाह' पर विचार करने के लिए हर पंद्रहवें दिन सभा की जाती। उसमें नारी-संबंधी समस्याओं पर विचार किया जाता और उपाय भी सुझाए जाते। सचमुच यह पहला नारी संगठन था और सावित्री बाई नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेता थीं। वे लेखिका और कवियित्री भी थीं। अपने साहित्य में उन्होंने स्त्रियों को बराबरी का स्थान देने, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और गरीबों के उद्धार के लिए आवाज उठाई। नारी आंदोलन से उनका सीधा संबंध है।

डा. माली की पुस्तक 'क्रांति-ज्योति सावित्री बाई फुले' पर आधारित